शोध मंथन ISSN: (P): 0976-5255 (e): 2454-339X Impact Factor 6.726 (SJIF)
Vol. X, No.IV, pp (1109-1118) Oct.- Dec. 2019

बस्ती जनपद में ग्रामीण अवस्थापनात्मक तत्वों का विकास : एक भौगोलिक विश्लेषण

राजेन्द्र प्रताप चौधरी,
शोध छात्र, बुद्ध पी0जी0 कालेज, कुशीनगर।
Email : rp91.rajendra@gmail.com

सारांश

अवस्थापनात्मक तत्वों से तात्पर्य मानव निर्मित ऐसे मूर्त तत्वों से है, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं। आर्थिक विकास वस्तुतः मनुष्य और सम्बन्धित पर्यावरण तत्वों के अन्तर्प्रक्रियात्मक सम्बन्धों का परिणाम है, जिसमें आर्थिक विकास के लिए उत्तरदायी संसाधनों का उपयोग किया जाता है। किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास की सम्भावनाओं में वृद्धि अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास से सम्भव है। स्वयं अवस्थापनात्मक तत्वों का निर्माण और उपयोग क्षेत्र–विशेष के भौगोलिक स्वरूप पर निर्भर करता है। भू–वैन्यासिक सन्दर्भ में आर्थिक विकास के मॉडल हेतु आधारभूत संरचना की संकल्पना का उल्लेख सर्वप्रथम ए0ओ0 हर्समैन ने 1958 में किया था।

प्रस्तावना

अवस्थापनात्मक तत्वों से तात्पर्य मानव निर्मित ऐसे मूर्त तत्वों से है, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करते हैं। आर्थिक विकास वस्तुतः मनुष्य और सम्बन्धित पर्यावरण तत्वों के अन्तर्प्रक्रियात्मक सम्बन्धों का परिणाम है, जिसमें आर्थिक विकास के लिए उत्तरदायी संसाधनों का उपयोग किया जाता है। किसी भी क्षेत्र के आर्थिक विकास की सम्भावनाओं में वृद्धि अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास से सम्भव है। स्वयं अवस्थापनात्मक तत्वों का निर्माण और उपयोग क्षेत्र–विशेष के भौगोलिक स्वरूप पर निर्भर करता है। भू–वैन्यासिक सन्दर्भ में आर्थिक विकास के मॉडल हेतु आधारभूत संरचना की संकल्पना का उल्लेख सर्वप्रथम ए0ओ0 हर्समैन ने 1958 में किया था। अवस्थापना तत्व एक समूह बोधक शब्द है, जिसमें सभी सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक तत्व एवं संस्थागत सुविधाएँ तथा प्रशासनिक स्रोत को सम्मिलित किया जाता है (बुश फिल्ड, 1976)।

वेंकटचलम् (2003) के अनुसार अवस्थापना का स्तर वह प्रमुख कारक है, जिसके द्वारा कृषि विकास में व्याप्त क्षेत्रीय संतुलन एवं असंतुलन को समझाया जा सकता है। अवस्थापना तत्व ग्रामीण विकास के न केवल अवयव है, अपितु गरीबी कम करने सम्बन्धी किसी भी धारणीय कार्यक्रम की सफलता सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण भाग भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में इसके समुचित विकास से ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं जीवन स्तर में सुधार आता है, जिसमें बेहतर उत्पादकता को बल मिलता है।

अध्ययन क्षेत्र

बस्ती जनपद घाघरा और आमी नदियों के मध्य स्थित उत्तर प्रदेश, उत्तर–पूर्वी भाग का जिला है। जनपद $26^0 23'$ तथा $27^0 30'$ उत्तरी अक्षांश और $82^0 17'$ तथा $83^0 20'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद के उत्तर में सिद्धार्थनगर, पूरब में संतकबीर नगर, पश्चिम में गोण्डा तथा दक्षिण में फैजाबाद एवं अम्बेडकर नगर स्थित है। समुद्र तल से ऊँचाई 91 मीटर है। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् गोरखपुर से काटकर 6 मई 1865 में बस्ती को जनपद बनाया गया। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 2938 वर्ग किमी0 है। जिले के उत्तर से दक्षिण लम्बाई 70 किमी0 और पश्चिम से पूरब की चौड़ाई 55 किमी0 है। बस्ती जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल उत्तर प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.12 प्रतिशत है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 2463939 है। वर्तमान समय में बस्ती जनपद में चार तहसीले एवं 14 विकासखण्ड है। जनपद में कुल 139 न्यायपंचायत तथा 1247 ग्राम पंचायतें है।

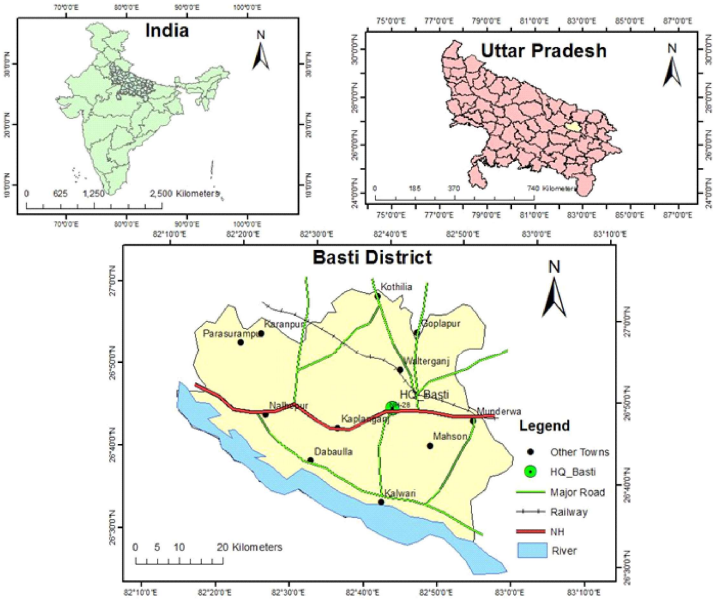

विधितंत्र एवं उद्देश्य

यह शोध पत्र मुख्य रूप से द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। आँकड़े जनपद की सांख्यिकीय पत्रिका से प्राप्त किये गये हैं। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एवं ग्राफ का निर्माण कम्प्यूटर की सहायता से किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अवस्थापना तत्वों के विकास का भौगोलिक विश्लेषण करना है।

सिंचाई के साधन

कृषि विकास में सिंचाई की भूमिका महत्वपूर्ण, क्योंकि फसलों की उपज के लिए समय

पर पर्याप्त एवं समुचित जल की आपूर्ति आवश्य है। वर्षा की अपर्याप्तता की स्थिति में फसलोत्पादन हेतु खेत में कृत्रिम विधि से जलापूर्ति को सिंचाई कहते है।

जनपद में 2013–14 में कुल कृषिगत भूमि का 84.6 प्रतिशत भाग सिंचित था जो 2014–15 में बढ़कर 91.1 प्रतिशत हो गया। स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में परम्परागत सिंचाई स्रोतों के स्थान पर आधुनिक साधनों तथा बोंरिग पर लगे सरकारी एवं व्यक्तिगत नलकूपों के विस्तार के फलस्वरूप सिंचाई साधनों एवं सिंचित भूमि में वृद्धि का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई के मुख्य स्रोत सरकारी नलकूप, प्राइवेट नलकूप, नहर, कुआँ तालाब है। जनपद में कुल सिंचित क्षेत्रफल 176881 हेक्टेयर है।

सारणी–1 जनपद बस्ती में विभिन्न स्रोतों से सिंचित भूमि 2013–14

स्रोत	सिंचित भूमि (हे0 में)	सिंचित भूमि (प्रतिशत में)
नहर	278	0.16
राजकीय नलकूप	7230	4.10
निजी नलकूप	120441	68.39
कुआँ	47852	27.17
तालाब	314	0.18
अन्य	0	0
कुल ग्रामीण	**176115**	**100.00**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बस्ती, 2014–15

जनपद के उत्तर–पूरब विकासखण्डों (रामनगर, रूधौली) में ही केवल नहर सुविधा उपलब्ध है जबकि शेष सभी विकासखण्डों में नहर सुविधा उपलब्ध नहीं है। जनपद में कुल सिंचित भूमि 0.16 प्रतिशत भाग नहर सिंचाई के अन्तर्गत आता है। जनपद का 4.10 प्रतिशत भाग राजकीय नलकूप से सिंचित हैं जनपद में रामनगर (75) और बस्ती विकासखण्ड (81) में राजकीय नलकूपों की संख्या सर्वाधिक है। जबकि सबसे कम राजकीय नलकूप दुबौलिया (16) और बहादुर (20) विकासखण्डों में है। जनपद में निजी नलकूपों की संख्या 82447 है, जिसमें जनपद का 68. 39 प्रतिशत भाग सिंचित किया जाता है (सारणी–1, सारणी–2)।

शैक्षिक सुविधायें

शैक्षिक सुविधाऐं किसी भी क्षेत्र अथवा देश के सामाजिक विकास का सर्वश्रेष्ठ मापक है। किसी भी क्षेत्र में उनके वितरण प्रतिरूप में उनमें मिलने वाली विविधता सामाजिक विकास में असंतुलन को प्रदर्शित करती है ।

जनपद में 2013–14 में ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 1704 थी, जो 2014–15 में बढ़कर 1714 और 2015–16 में बढ़कर 1715 हो गयी। विकासखण्ड गौर में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या सबसे अधिक (150) है जबकि सबसे कम प्राथमिक विद्यालयों की संख्या कप्तानगंज (88) है। जबकि उच्च प्राथमिक की संख्या 631 है।

सारणी–2, जनपद बस्ती में सिंचाई की सुविधाएँ, 2013–14

क्र. सं.	विकासखण्ड	सिंचाई के स्रोत				
		नहर (किमी0)	राजकीय नलकूप	कुआँ	बिजली चालित नलकूल	डीजल नलकूप
1	परशुरामपुर	0	44	5	23	6364
2	गौर	0	38	2	21	6812
3	हर्रैया	0	28	3	25	8527
4	विक्रमजोत	0	21	2	24	7890
5	कप्तानगंज	0	45	0	27	4108
6	रामनगर	148	75	0	30	4403
7	सल्टौआ गोपालपुर	0	49	2	26	5892
8	रूधौली	130	26	3	35	4582
9	साऊँघाट	0	38	3	25	5865
10	बस्ती सदर	0	81	4	33	5062
11	बनकटी	0	63	6	27	7010
12	बहादुरपुर	0	20	2	25	6314
13	कुदरहा	0	30	7	26	5198
14	दुबौलिया	0	16	3	25	4048
	कुल ग्रामीण	**278**	**574**	**44**	**372**	**82075**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बस्ती, 2014–15

विकासखण्ड परसरामपुर (57) और बस्ती सदर (53) सर्वाधिक है जबकि दुबौलिया (35) बहादुरपुर (40) सबसे कम उच्च प्राथमिक विद्यालय है। जनपद में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या (2015–16) में 298 है। जनपद के विकासखण्ड बनकटी (40) गौर (28) में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या सर्वाधिक है जबकि दुबौलिया (14) और कुदरहा विकासखण्डों में इनकी संख्या सबसे कम है।

सारणी–3, बस्ती जनपद में यातायात के स्रोतों की लम्बाई

विकासखण्ड	प्राथमिक विद्यालय	उच्च प्राथमिक विद्यालय	मध्यमिक विद्यालय	महाविद्यालय	स्नातकोत्तर महाविद्यालय	औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान
परशुरामपुर	135	57	17	2	0	5
गौर	150	54	28	3	1	3
हर्रैया	134	50	21	2	0	1
विक्रमजोत	120	49	18	2	0	0
कप्तानगंज	88	39	24	1	0	0
रामनगर	107	35	15	2	0	1
सल्टौआ गोपालपुर	130	47	16	1	0	0
रूधौली	105	38	23	2	0	0
साऊँघाट	123	48	21	4	0	1
बस्ती सदर	136	53	26	8	0	1
बनकटी	141	42	40	4	1	2
बहादुरपुर	135	40	20	4	0	0
कुदरहा	117	44	15	2	0	0
दुबौलिया	90	35	14	3	0	1
कुल ग्रामीण	**1715**	**631**	**298**	**40**	**2**	**15**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बस्ती, 2014–15

उच्च शिक्षा की ओर देखे तो जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में 2013–14 में 24 महाविद्यालय ये जो (2015–16) में बढ़कर 40 हो गये। जबकि वही स्नातकोत्तर महाविद्यालय ग्रामीण क्षेत्र में केवल दो विकासखण्डों गौर (1) बनकटी (1) है। जनपद में एक मेडिकल कालेज, 15 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान एवं दो पॉलिटेक्निक कालेज है।

डीजल नलकूप
6364
6812
8527
7890
4108
4403
5892
4582
5865
5062
7010
6314
5198
4048
82075

सारणी–4, बस्ती जनपद में संचार एवं स्वास्थ्य सुविधाएँ, 2014–15

विकासखण्ड	डाकघर	रेलवे स्टेशन	विद्युतीकृत गांवों का कुल आबाद गांवों की संख्या	प्रति लाख जनसंख्या पर कुल पक्की सड़कों की लम्बाई	प्रतिलाख जनसंख्या पर प्राथमिक स्वास्थ्य हेतु सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या	परिवार एवं मातृ–बाल कल्याण केन्द्र उपकेन्द्र
परशुरामपुर		0	59.8	120.7	2.1	23
गौर		3	65.7	111.4	2.9	26
हर्रैया		0	57.1	134.1	3.1	20
विक्रमजोत		0	88.6	156.1	2.8	17
कप्तानगंज		0	84.7	183.0	0.9	13
रामनगर		0	91.3	145.5	2.3	22
सल्टौआ गोपालपुर		1	70.0	123.2	1.6	22
रूधौली		0	71.8	154.1	3.3	16
साऊँघाट		1	82.3	132.7	2.4	17
बस्ती सदर		1	56.2	102.8	2.2	22
बनकटी		1	66.7	124.0	2.६	22
बहादुरपुर		0	73.7	121.2	1.2	21
कुदरहा		0	76.7	157.4	1.4	16
दुबौलिया		0	74.9	177.6	2.6	16
कुल ग्रामीण		**7**	**72.0**	**134.6**	**2.2**	**273**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बस्ती, 2015–16

परिवहन एवं संचार के साधन

परिवहन एवं संचार व्यवस्था यांत्रिक साधनों और संगठनों का एक संगठित योग है, जो व्यक्तिों वस्तुओं तथा समाचारों का एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने में सहायक होते हैं। इससे कृषि विकास और विपणन को मजबूत करने तथा ग्रामीण विकास को गति प्रदान करने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान में वृद्धि हेतु परिवहन का योगदान उल्लेखनीय है।

अध्ययन क्षेत्र में रेवले एवं सड़क मार्ग का विस्तृत जाल है 2014–15 में जनपद में कुल रेलवे मार्ग की लम्बाई 54 किमी0 थी। जनपद के केवल पाँच विकासखण्ड गौर, सल्टौआ, बस्ती सदर, साऊँघाट और बनकटी रेलवे मार्ग से जुड़े हैं। जनपद में कुल रेलवे स्टेशनों की संख्या 7

है। जनपद सड़क मार्ग से पूर्णतया आबद्ध है इसके लगभग मध्य भाग से राष्ट्रीय राजमार्ग 28 होकर जाता है जिसकी कुल लम्बाई 72.99 किमी0 है। जो पूरब–पश्चिम गलियारे के अन्तर्गत आता है। यह बस्ती को लखनऊ से गोरखपुर को जोड़ता है। प्रादेशिक राजमार्ग–72 राम जानकी मार्ग – यह मार्ग मूलतः अयोध्या से शुरू होता है लेकिन इसकी अपनी पहचान जनपद के छावनी बाजार से शुरू होती है ये सड़क छावनी से शुरू होकर अमोढ़ा, अगौना, कलवारी बाजार को जोड़ती हुई संतकबीर नगर जनपद से होती हुई गोरखपुर जनपद तक जाती है जिले में इसकी कुल लम्बाई 55 किमी0 है। 2014–15 में जनपद में मुख्य मार्गों की लम्बाई 52 किमी0 थी। जबकि अन्य ग्रामीण मार्गों की लम्बाई 3366 किमी0 थी। प्रति लाख जनसंख्या पर कुल पक्की सड़कों की लम्बाई 134.6 किमी0 है। जनपद के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित विकासखण्डों सल्टौआ, गोपालपुर, रूधौली, रामनगर में तथा मध्य भाग में स्थिति बस्ती सदर में पक्की सड़कों का वितरण अधिक है, जिसका मुख्य कारण सेवा केन्द्रों की उपस्थिति, ग्रामीण लघु उद्योगों का विकास है। पक्की सड़कों में मध्य श्रेणी का वितरण प्रतिरूप हर्रेया, गौर, विक्रमजोत विकासखण्ड में है, जबकि निम्न श्रेणी का वितरण दुबौलिया, कुदरहा, बनकटी, साऊँघाट, रामनगर में हैं। इन विकासखण्डों में पक्की सड़कों के वितरण के कमी होने का मुख्य कारण राजमार्गों का अधिक दूरी तथा जिला मुख्यालय से दूरी पर होना तथा प्राकृतिक बाधाओं का होना है।

सारणी–5, बस्ती जनपद में यातायात के स्रोतों की लम्बाई

रेलवे मार्ग की लंबाई – 2014–15	54 किमी0
राष्ट्रीय राजमार्ग	72.99 किमी0
राजकीय राजमार्ग	98 किमी0
मुख्य जनपद मार्ग	52 किमी0
जनपद के अन्य ग्रामीण मार्ग	3366

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बस्ती, 2014–15

2014–15 में जनपद में कुल डाकघरों की संख्या 248 थी जिनमें से 12 नगरीय क्षेत्रों में स्थित थे। सबसे अधिक बनकटी (26) सबसे कम विक्रमजोत में (6) थी। जनपद के उत्तर–पश्चिम विकासखण्डों में हर्रेया, गौर, सल्टौआ में डाकघरों की संख्या अधिक होने का मुख्य कारण जनसंख्या का अधिक होना है। जनपद में कुल बस स्टापों की संख्या 7 थी। जिनमें सबसे अधिक गौर (2) थे जबकि दुबालिया, कुदरहा, बहादुरपुर, रामनगर, विक्रमजोत में एक भी बस स्टाप नहीं है। जनपद का उत्तरी–पूर्वी एवं पश्चिमी–मध्य भाग परिवहन एवं संचार के साधनों से युक्त है।

विद्युतीकरण

किसी भी स्थान विशेष का विकास एवं प्रगति उस क्षेत्र में उपलब्ध सुविधाओं के आधार पर होता है। इन सुविधाओं में विद्युत, परिवहन एवं संचार सेवायें तथा संस्थागत वित्त से सम्बन्धित सुविधाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है। विद्युत वितरण प्रणाली न केवल उद्योगों को

पूरा करने के लिए आवश्यक है बल्कि कृषि के विकास में विद्युत उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका है। वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों के रहन–सहन के साथ आर्थिक विकास को भी सुदृढ़ करती है।

2015–16 में कुल 2273 गाँवों का विद्युतीकरण हो गया था। रामनगर (91.3), विक्रमजोत (88.6) विकासखण्ड में गाँवों का विद्युतीकरण हो चुका है जबकि सबसे कम विद्युतीकृत गाँवों की संख्या बस्ती सदर विकासखण्ड में (70 प्रतिशत) है।

स्वास्थ्य सुविधाएँ

बस्ती जनपद में एलोपैथिक इकाईयों की संख्या 19 है जिनमें से 5 नगरीय क्षेत्रों के अन्तर्गत है। आयुर्वेदिक इकाईयों की संख्या 35 है, होम्योंपैथिक इकाईयों की संख्या 20 है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 30 है, जबकि सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या 9 है। प्रति लाख जनसंख्या पर एलोपैथिक इकाई, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या 2.2 है जबकि वही प्रति लाख जनसंख्या पर एलोपैथिक इकाई, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर शैय्याओं की संख्या 42.2 है।

जनपद के समस्त विकासखण्डों में एक–एक एलोपैथिक चिकित्सालय कार्यरत है। आयुर्वेदिक चिकित्सालय जनपद के सभी विकासखण्डों में कार्यरत है। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या गौर विकासखण्ड में 4 है। जबकि हर्रेया, रूधौली, बस्ती सदर, बनकटी में तीन–तीन है सबसे कम बहादुरपुर कुदरहा में एक–एक है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों का वितरण जनपद के केवल 9 विकासखण्डों में है। जिनमें से परशुरामपुर, गौर, हर्रेया, विक्रमजोत, रामनगर, रूधौली, साऊँघाट, बस्ती सदर और बनकटी है। बाकी पाँच विकासखण्डों – दुबौलिया, कुदरहा, बहादुरपुर, सल्टौआ गोपालपुर, कप्तानगंज में एक भी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र नहीं है।

जनपद में परिवार एवं मातृ–शिशु कल्याण उपकेन्द्रों के श्रेणीगत वितरण तालिका संख्या–4 में दर्शाया गया है अति उच्च श्रेणी वितरण और विकासखण्ड में है जबकि उच्च श्रेणी का वितरण परशुरामपुर, रामनगर, सल्टौआ गोपालपुर, बस्ती सदर, बनकटी, बहादुरपुर में पाया जाता है। मध्यम श्रेणी का वितरण हर्रेया, विक्रमजोत, साऊँघाट, कुदरहा, दुबौलिया विकासखण्ड में पाया गया है, जबकि निम्न श्रेणी का वितरण जनपद के कप्तानगंज विकासखण्ड में है। जनपद में परिवार कल्याण एवं मातृ शिशु कल्याण उपकेन्द्रों की असमानता का कारण जनसंख्या का दबाव तथा जनपद मुख्यालय एवं सेवा केन्द्रों से दूरी हैं

औद्योगिक अवस्थापना

औद्योगिक विकास किसी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उद्योग का अर्थ है, विज्ञान एवं तकनीक की सहायता से बौद्धिक, सांस्कृतिक और आर्थिक क्षमता के अनुसार किसी भी कार्य को व्यवस्थित रूप में सम्पन्न करना। इस प्रकार सभी प्रकार के आर्थिक कार्य इस श्रेणी में आते हैं। सामान्यतः उद्योगों को चार भागों में विभाजित किया गया है – निष्कर्षण उद्योग, पुनरूत्पादन उद्योग, वस्तु निर्माण उद्योग तथा सहायक उद्योग। ऐसे सभी आर्थिक कार्य को धरातल पर पाये जाते है, निष्कर्षण उद्योग की श्रेणी में आते हैं। वह उद्योग जिसमें वेतन पर

कार्य करने वाले 50 से कम श्रमिकाकें की सहायता से उत्पादन हो तथा किसी मशीन का प्रयोग न होता हो और यदि मशीन का प्रयोग होता हो तो वेतनभोगी श्रमिकों की संख्या 20 से कम हो लघुउद्योग कहलाता है (भारतीय जनगणना सार 2001)।

अध्ययन क्षेत्र कषि प्रधान जिला है। यहाँ पर 18 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से कषि पर निर्भर है। यहाँ की भू–गर्भिक स्थिति इस प्रकार की नहीं है, कि यहाँ कोई खनिज उपलब्ध नहीं है, अतः यहाँ पर उद्योगों का अभाव है। वाणिज्य फसलों के अन्तर्गत यहाँ के कृषक गन्ना व सरसों की खेती करते हैं। अध्ययन क्षेत्र में डेयरी, मुर्गीपालन, ईंट–भट्टा, काष्ठ एंव नक्काशी आदि उद्योग प्रमुख रूप से पाये जाते है। जनपद में मुख्य रूप से चार चीनी मिले क्रमशः बस्ती (वर्तमान में बन्द), वाल्टरगंज (वर्तमान में बन्द) रूधौली और मुण्डेरवा कार्यरत है।

बस्ती जनपद में कुल पूँजीगत कारखानों की संख्या 2012–13 में 18 थी, लेकिन 2014–15 में इनकी संख्या 16 हो गयी। जैसे–जैसे कारखानों की संख्या घटती गयी कार्यरत श्रमिकों एवं कर्मचारियों की संख्या में भी कमी आयी है। इस जनपद में औद्योगिक कारखानों के कम विस्तार का मुख्य कारण अवस्थापनात्मक तत्वों का कम विकसित होना है।

सारणी–6, बस्ती जनपद में कारखानें एवं कार्यरत लोग

क्र.सं.	मद	2012–13	2013–14	2015–16
1	पूँजीगत कारखाना (संख्या)	18	16	16
2	चयनित कारखानों के अन्तर्गत			
	(अ) कार्यरत कारखानें (संख्या)	7	11	16
	(ब) कारखाने जिनसे रिटर्न प्राप्त हुए (संख्या)	7	11	6
3	औसत दैनिक कार्यरत श्रमिकों एवं कर्मचारियों की संख्या	1144	1336	751

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद बस्ती, 2015–16

निष्कर्ष

प्रत्येक अवस्थापना तत्व क्षेत्र विशेष के विकास प्रक्रिया में अपना अलग–अलग महत्व रखते है। विनिमय पर आधारित विश्व की वर्तमान अर्थव्यवस्था में परिवहन एवं संचार तत्वों का सर्वाधिक महत्व है। ये तत्व आर्थिक विशेषीकरण वृहद पैमाने पर उत्पादन तथा उत्पादनों के वितरण एवं संचरण के साथ नीतियों, योजनाओं एवं आविष्कारों के प्रसार एवं संचार के आधार होते हैं। प्राविधिकी स्थानांतरण के फलस्वरूप विकास प्रक्रिया में गतिशीलता आती है। जीवन स्तर में सुधार, जीवन संभाव्यता में वृद्धि, जनसंख्या नियंत्रण में आये परिवर्तन तकनीकी प्रगति का परिणाम है। वितरण केन्द्रों की संख्या ही उसका भूव्यैयासिक पदानुक्रम वितरण के समीपता तथा गम्यता विभिन्न उत्पाद एवं उपयोग की प्रक्रिया एंव उसके स्तर को निर्धारित करती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन, पेय एवं अन्य उपयोग युक्त जल आदि की व्यवस्था मानव में गुणात्मक

विकास लाती है। जनपद बस्ती के मुख्य भाग ममें रेलवे से जुड़े होने के कारण इन विकासखण्डों में अधिक विकास हो गया है। उसी प्रकार जो विकासखण्ड जनपद मुख्यालय से नजदीक है, वहाँ पर प्रति लाख जनसंख्या पर स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या कम है। जो विकास मुख्य राज्यमार्गों एवं रेलवे से जुड़े है उनमें अवस्थापनात्मक तत्वों का विकास अधिक हुआ है। इसलिए जिन विकासखण्डों में अवस्थापना तत्वों का वितरण कम है उन में आर्थिक विकास की सुदृढ़ करने के लिए अवस्थापनात्मक तत्वों के विकास की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. गुप्ता, रीना (2015) : *''संतकबीर नगर जनपद में अवस्थापनात्मक तत्व एवं ग्रामीण विकास''* शोध प्रबन्ध (दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)।
2. सोनकर, विशाल (2015) : *''बाराबंकी जनपद में ग्रामीण विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन''*, शोध प्रबन्ध (दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)।
3. देसाई, ए0आर0 (2018) : *''भारतीय ग्रामीण–समाजशास्त्र''*।
4. शर्मा, रेखा (2012) : *''ग्रामीण विकास एवं नियोजन''।*
5. पाठक, राजीव (2012) : *''भारत में ग्रामीण विकास यथार्थ और चुनौतियाँ''*।
6. सिंह, कटार (2011) : *''ग्रामीण विकास सिद्धान्त, नीतियाँ एवं प्रबन्ध''।*